हिंदी विभाग,
डी०एस०पी०एम०यू०, रांची
स्नातक प्रतिष्ठा
समसत्र-4

प्रयोजनमूलक हिंदी

(तात्पर्य, स्वरूप, परिभाषा, उपयोगिता, प्रासंगिकता, विशेषता, प्रयुक्तियां एवं दिशाएं)

-डॉ० यशोधरा राठौर

खंड- 'क'

प्रिय छात्रों! प्रयोजनमूलक हिंदी के तात्पर्य, स्वरूप, परिभाषा, उपयोगिता, प्रासंगिकता, विशेषताओं और प्रयुक्तियों एवं दिशाओं से संबंधित सवाल सदैव ही आपकी जिज्ञासाओं से जुड़े रहे हैं। हालांकि समय-समय पर इस संदर्भ में तर्कपूर्ण व्याख्यानों से आपका ज्ञान बढ़ाया गया है, फिर भी आपकी विशिष्ट जिज्ञासाओं को शांत करने एवं संबंधित ज्ञान प्रदान करने हेतु आप प्रस्तुत व्याख्यान से अवश्य लाभान्वित हो सकेंगे। मेरा विश्वास है कि यह आपकी समस्त जिज्ञासाओं का आपके सिलेबस के अनुसार एक आदर्श प्रत्युत्तर होगा और प्रयोजनमूलक हिंदी के संबंध में आवश्यक संज्ञान भी आप प्राप्त कर सकेंगे। तो आइए, सर्वप्रथम हम इसके अर्थ, परिभाषा और इसके स्वरूप पर बात करते हैं।

आप सभी जानते हैं कि भाषा विचारों को व्यक्त करने का माध्यम है। यह हमारी सांस्कृतिक चेतना और साहित्यिक परंपरा का संचालक भी है। भाषा मूलत: जीवन के विभिन्न उतार-चढ़ाव मानवीय जीवन मूल्यों, टूटते बनते मानवीय रिश्तों की साक्षी रही है। आप जानते हैं कि भाषा का प्रयोग हम राजनीतिक सामाजिक और सांस्कृतिक जनआंदोलनों के इतिहास से जोड़कर भी देखते हैं। साथ ही साथ अभिव्यक्ति के लिए व्याकुल जनांदोलन का इतिहास

भी इसमें समाहित है। आम व्यक्ति की पीड़ा से लेकर अभिव्यक्ति का इतिहास हमेशा से ही उतार-चढ़ाव और पूर्णविराम पाता रहा है।

भाषा एक संस्कार है। मूल रूप से इसके दो पक्ष होते हैं- पहला जो सौंदर्यपरक अर्थात् साहित्यिक भाषा और दूसरा प्रयोजनपरक । भाषा का सौंदर्यपरक रुप अनुभूतियों के आयाम और आत्मकेंद्रण से जुड़ा है जबकि प्रयोजनपरक भाषा हमारी सामाजिक आवश्यकताओं और जीवन की उस व्यवस्था से जुड़ी है जो व्यक्तिपरक होकर भी समाज सापेक्ष होता है अर्थात् जो समाज से जुड़कर सामाजिक टूल्स तथा हथियार बनकर काम करता है। अब स्पष्ट है कि समय के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्यिक भाषा व्यवहारिक भाषा से अलग हो गई है। आज तत्सम शब्दावलियों की भाषा रंग-रोगन की भाषा, साहित्यिक भाषा जिसमें हम समस्त रंगों को देखते हैं अर्थात् साहित्य के नवरस, छंद, अलंकार तमाम चीजें सौंदर्यानुभूति के अंतर्गत आती है और वह साहित्यिक भाषा होती है। आज वस्तुतः साहित्यिकता की नहीं जीवंतता की आवश्यकता है। ऐसे मैं वैसी ही भाषा कारगर हो सकती है जो जीवन के उठा-पटक और उतार चढ़ाव को व्यक्त करने में सहजता से सक्षम हो। तो जाहिर सी बात है कि प्रयोजनमूलक हिंदी इन शर्तों पर खरी उतरती है और आवश्यकतानुसार प्रासंगिक भी प्रतीत होती है।

भाषा के विविध आयामों से जुड़कर प्रयोजनमूलक हिंदी अनेक संकल्पनाओं को साकार करती है जिससे शासन-प्रशासन, राजभाषा, कार्यालय की भाषा भी कहा गया है। मूल रुप से यह कामकाज की भाषा ही है। भारत देश की सभ्यता-संस्कृति और आमजीवन की संवाहिका बनकर यह जन-जन की भाषा बन चुकी है। यह विभिन्न धर्मावलंबियों की भाषा है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, तकनीकी एवं मीडिया आदि से संबंधित तमाम विषयों को अभिव्यक्त करने की अभूतपूर्व क्षमता प्रयोजनमूलक हिंदी में है। हम सभी जानते हैं कि संस्कृत भाषा विश्व की समृद्ध भाषा होने के बावजूद भी व्यवहारिक नहीं हो सकी।

प्रयोजनमूलक हिंदी का विकास और इससे जुड़ी यात्रा का प्रारंभ सन् 1955 में हुआ और सन् 1960 तक यह गतिशील हो पायी। प्रयोजनमूलक हिंदी ने वर्तमान हिंदी को एक नई दिशा प्रदान की जिसकी आवश्यकता बहुत ज्यादा थी। हिंदी के कार्यों को प्रोत्साहन देने के लिए सरकारी स्तर पर अंग्रेजी भाषा का चलन प्रयोजनमूलक हिंदी के आने से थम-सा गया। आज वेतन वृद्धि, पुरस्कार, राजभाषा, कार्यालय की समस्त गतिविधियां प्रयोजनमूलक हिंदी में बहुत आसान तरीके से संपन्न की जाती है जिससे हिंदी को लाभ मिला है।
वस्तुत: प्रयोजनमूलक हिंदी सरल, सुबोध और जनसाधारण के द्वारा प्रयोग की भाषा है। सामान्य भाषा का व्यवहार क्षेत्र जहां विशाल एवं व्यापक है वहां प्रयोजनमूलक हिंदी का क्षेत्र संकुचित और सीमित है।

तात्पर्य यह कि साहित्यिक भाषा के जैसी संवेदनाओं भाषा नहीं है परन्तु प्रयोजनमूलक हिंदी अपने स्वरुप में सपाट और सरल है जिससे अभिव्यक्ति अधिक से अधिक हो पाती है। मूलत: **साहित्यिक भाषा का लक्ष्य सौंदर्यानुभूति अथवा चमत्कार होता है जबकि प्रयोजनमूलक हिंदी का पहला और अंतिम लक्ष्य केवल और केवल सेवा है जो जीविकोपार्जन की लिए बहुत आवश्यक है।**

वस्तुत: भाषा का प्रयोजनपरक आयाम हमारी सामाजिक आवश्यकता और जीवन की उपयोगिता से जुड़ा हुआ होता है जो व्यक्तिपरक होकर भी समाज सापेक्ष होता है और जिसका सीधा संबंध मूलतः हमारी जीविका के साथ होता है और उसके निमित्त जो भी सेवाएं प्रदान की जाती है वो इस भाषा से सरल, सुबोध बनकर प्रयुक्त होती है। अतएव, भाषा व्यवहार का यह दूसरा पक्ष ही प्रयोजनमूलक हिंदी है जिसका तात्पर्य हिंदी के उन विविध रुपों से है जो सेवा माध्यम में हमारे समक्ष आते हैं।

इस प्रकार प्रयोजनमूलक हिंदी की उपयोगिता एवं इसकी प्रासंगिकता हमारे लिए बहुत ही आवश्यक है। जहां तक इसकी प्रासंगिकता का सवाल है यह एक साथ विविध आयामों से जुड़ी हुई भाषा है जो शासन प्रशासन की, राजभाषा

या कार्यालयी भाषा कही जा सकती है। विभिन्न विज्ञान, प्रौद्योगिकी, तकनीकी और मीडिया आदि से संबंधित विषयों को अभिव्यक्त करने की इस भाषा में अपूर्व क्षमता है। प्रयोजनमूलक हिंदी वस्तुत: में बेहद सरल, सुबोध और जनसाधारण के द्वारा प्रयुक्त की गई भाषा है।

भाषा का प्रयोजनपरक आयाम हमारी सामाजिक आवश्यकताओं से जुड़ा है। इस दृष्टि से प्रयोजनमूलक हिंदी की उपयोगिता को बड़ी सहजता से समझा जा सकता है। जहां तक इसके स्वरुप का सवाल है, सामान्यतः सामान्य भाषा प्रयोजनमूलक भाषा ही होती है परंतु इसकी शब्दावली अलग-अलग होती है। प्रयोजनमूलक हिंदी दरअसल व्यवहारिक हिंदी है। इसमें प्रयोजनमूलक शब्दों का परिभाषिक प्रयोग होता है जो विशेष रुप से उभरकर हमारे समक्ष आता है। प्रयोजनमूलक हिंदी के संबंध में विभिन्न विद्वानों ने इसकी विभिन्न परिभाषाएं दी हैं-

1. डॉ० नगेंद्र का कहना है कि **प्रयोजनमूलक हिंदी के विपरीत यदि कोई हिंदी है तो वह निष्प्रयोजनमूलक हिंदी या आनंदमूलक हिंदी ही है। आनंद व्यक्ति सापेक्ष है और प्रयोजन समाज सापेक्ष। आनंद स्वकेंद्रित है और प्रयोजन समाज की ओर इशारा करता है। हम आनंदमूलक हिंदी के विरोधी नहीं है इसीलिए आनंदमूलक हिंदी के साहित्य के हम भी हिमायती है पर सामाजिक आवश्यकताओं के संदर्भ में हम संप्रेषण के बुनियादी आधार को अपनी नजर से ओझल नहीं करना चाहते।**

2. डॉ० ब्रजेश्वर वर्मा का कहना है कि **निष्प्रयोजन हिंदी कोई चीज नहीं है लेकिन प्रयोजनमूलक विशेषण उसके व्यवहारिक पक्ष को अधिक उजागर करने के लिए प्रयोग किया जाता है।**

3.मोटूरि सत्यनारायण ने कहा है कि **जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोग में लायी जाने वाली हिंदी ही प्रयोजनमूलक हिंदी है।**

4.डॉ० रघुवीर सहाय का कहना है कि **<u>प्रयोजनमूलक हिंदी की परिकल्पना यह मानकर चलती है कि वह ऐसी शब्दावली होगी जो ज्ञान के संप्रेषण में काम आएगी इसलिए बाकी शब्दावली से भिन्न होगी और उस पर आश्रित भी नहीं होगी ।</u>**

5. डॉ० शिवेंद्र वर्मा का कहना है कि **<u>प्रयोजनमूलक हिंदी से तात्पर्य विषयबद्ध एवं परिस्थितिबद्ध हिंदी के भाषा रुप से है।</u>**

6. प्रसिद्ध भाषाविद् डॉ० बालेंदु शेखर तिवारी ने कहा है कि **<u>प्रयोजनमूलक भाषा से तात्पर्य ऐसी व्यवहारिक भाषा से है जिसका प्रयोग एकाधिक विशेष प्रयोजनों के लिए हो। यह भाषा व्यापक स्तर पर जीवनोपयोगी उपकरणों से बनती है और इसकी व्यवहारिक कुशलता में कोई संदेह नहीं किया जा सकता</u>**

7.डॉ० श्याम स्नेहीलाल शर्मा का कहना है कि **<u>भाषा का प्रयोगपरक रुप ही प्रयोजनमूलक भाषा है जो प्रयोगपरक होने में विश्वास रखता है।</u>**

इस प्रकार से ये तमाम परिभाषाएं प्रयोजनमूलक हिंदी के अर्थ, उसकी गुणवत्ता और अभिप्राय को रेखांकित करती है।

आइए अब इसकी विशेषताओं को जाननें का प्रयास करें। प्रयोजनमूलक हिंदी की निम्नांकित प्रमुख विशेषताएं हैं-

(देखें पीडीएफ '**ख**' में......)